Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar

Verbal Learning
वाचिक अधिगम

"प्रायोगिक मनोविज्ञान में वाचिक अधिगम का अर्थ वाचिक सामग्री की मौलिक इकाईयों के बीच सम्बन्ध की स्थापना से है"
वस्तुत: मानव में अधिगम अधिकांशत: वाचिक अधिगम पाया जाता है जबकि पशुओं में गत्यात्मक अधिगम पाया जाता है वाचिक अधिगम के प्रायोगिक अधिगम में तीन प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है.

(A) निरर्थक पद (Nonsense syllables) - निरर्थक पदों पर सबसे पहले कार्य जर्मनी के एबिंगहास ने किया उन्होंने व्यंजन स्वर व्यंजन (C-V-C) प्रकार के तीन अक्षरों वाले 2300 निरर्थक पदों का निर्माण किया. जैसे: XOT, NIR, NOP आदि.
बचत विधि (Saving Method) - के माध्यम से एबिंगहास ने ज्ञात किया कि किसी पद किसी याद की हुई सामग्री का पुन: अधिगम किया जाए तो प्रयास एवं समय कम लगता है.

हिन्दी में निरर्थक पदों का निर्माण 1967 में सर्वप्रथम पादरी पाण्डे द्वारा किये गये.

(B) सार्थक पद (Meaningful) - ग्लेज ने अपने अध्ययनों में पाया कि निरर्थक शब्दों में कम या अधिक मात्रा में सार्थक पायी जाती है. अतः वाचिक अधिगम के प्रायोगिक अधिगम के प्रयोग होने लगा.

प्रायोगिक अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि सार्थक पदों की सार्थकता भी भिन्न-भिन्न होती है. जिस शब्द का प्रयोग जिस भाषा में जितनी अधिक बार होता है वे शब्द उतने ही अधिक सार्थक होते हैं तथा उनका सहचार्य मूल्य भी उतना ही अधिक होता है.

(C) संरचित क्रम वाले सार्थक तथा निरर्थक पद (Meaningful & Nonsense items in structural sequence) - इस प्रकार की सूची में शब्दों को ऐसे क्रम से रखा जाता है जिससे कोई अर्थपूर्ण वाक्य न बोले. ऐसी सूची की दो विशेषताएं होती हैं क्रमयुक्त आवारतव तथा व्याकरण संरचना. एपस्टाइन (1966) ने व्याकरण संरचना सहित निरर्थक वाक्यों का निर्माण किया.

वाचिक अधिगम की विधियाँ (Methods of studying verbal learning) प्रयोगशाला में प्रयोज्यों को वाचिक सामग्री का अधिगम कई प्रकार से कराया जाता है.

प्राय: इस कार्य में स्मृति ड्रम (Memory Drum) का प्रयोग किया जाता है इस उपकरण की सहायता से वाचिक सामग्री को प्रस्तुत करके प्रयोज्यों का अधिगम विभिन्न विधियों से कराया जाता है. यह प्रायोगिक प्रक्रियाएं या विधियां इस प्रकार हैं-

(A) मुक्त पुनर्स्मरण (Free Recall) - वाचिक अधिगम की सरलतम विधि है इसमें प्रयोज्य अपने सामने प्रस्तुत किये गए वाचिक पदों का पुनस्मरण जिस क्रम में चाहे कर सकता है.

(B) क्रमिक अधिगम विधि (Serial Learning Method) - इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग एबिंहॉस ने किया. इस विधि में सर्वप्रथम एबिंहॉस ने किया. इस विधि में सर्वप्रथम प्रयास में सूची के पदों को जिस क्रम में प्रस्तुत किया जाता है उस क्रम के अगले सभी प्रयासों में स्थिर रखा जाता है तथा प्रयोज्य को सूची के पदों का पुन: स्मरण में उसी क्रम में करना होता है, जिस क्रम में पदों को प्रस्तुत किया जाता है. इस विधि के दो प्रायाक्रियात भेद है.

1. क्रमिक प्रस्तुतिकरण विधि, 2. क्रमिक पूर्वाभास तथा उद्बोधन विधि.

(C) युगल साहचर्य विधि (Paired Associate Method) - यह विधि सर्वाधिक प्रचलित विधि है इसमें प्रयोगकर्ता द्वारा युग्मित पदों की सूचि तैयार कर ली जाती है. युग्मिक पद, निर्थक पदों, सार्थक पदों, कविताओं या इस तरह की अन्य सामग्री द्वारा बनाये जाते हैं, प्राय: इसकी संख्या 8 से 15 रखी जाती है इसमें युगल पदों की सम्पूर्ण सूची प्रायोज्य के सामने प्रस्तुत किया जाता है फिर पहले जोड़े के पहले पद को प्रस्तुत की जाती है, फिर पहले जोड़े के पहले पद को प्रस्तुत कर दूसरे

को पूर्वाभास कराया जाता है इस प्रकार सूची पदों के पूर्ण होने पर एक प्रयास माना जाता है.

(D) वाचिक विभेदन अधिगम की विधि (Discrimination Method of verbal Learning)- इस विधि के पहले प्रायोज्य के सामने प्रायोज्य के सामने सम्पूर्ण वाचिक सूची के एक क्रमिक ढंग में प्रस्तुत किया जाता है. फिर सूची के प्रत्येक पद के साथ तीन नये पदों को मिलाकर प्रायोज्य के सामने प्रस्तुत पदों को पहचान किया जाता है.

वाचिक अधिगम के निर्धारण (Determinants relates to verbal learning)- वाचिक अधिगम के निर्धारकों को हम अग्रलिखित दो भागों में बांटा जाता है.

(1) प्रायोज्य की विशेषताओं से सम्बन्धित निर्धारण (Determinants Relating to Subjects characteristics)- वाचिक अधिगम पर प्रायोज्य की कई विशेषताएं प्रभाव डालती हैं, जैसे: स्मृति प्रणाली की विशेषताएं, इस विशेषताएं में हम प्रणाली की विशेषताएं, अधिगम सामग्री की वरीय रखते हैं.

(A) आवृत्ति (Frequency)- पुन: स्मरण करते व्यक्त पदों का सही होना इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति उन पदों का अनुभव कितनी बार कर चुका है अण्डरवुड तथा शुल्ज ने इसे उद्‌गार परिकल्पना (Spew hypothesis) का नाम दिया जाता है.

(B) नवीनता (Recency)- वाचिक सामग्री का अनुभव प्रायोज्य द्वारा पुन: स्मरण करते समय उतना ही अधिक होता है. प्रायोज्य हो सकता है कि पूरी सूची का पुन: स्मरण न कर सके. परन्तु प्रायोज्य में इस प्रवृति का नियंत्रण एक चयनकारी क्रियात्मा (Selector Mechanism) द्वारा होता है. इस विशेषताएं

Next class.